३. अच्छा पड़ोस

–अरुण

भारत तथा पड़ोसी राष्ट्रों के सहसंबंध के संदर्भ में चर्चा कीजिए :–

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

● विद्यार्थियों से पड़ोसी राष्ट्रों के नाम और जानकारी पूछें । ● पड़ोसी राष्ट्रों के आपसी संबंधों के बारे में कहलवाएँ । ● पड़ोसी धर्म निभाने वाली संस्मरणीय घटना बताने के लिए प्रेरित करें।

मेरे सब पड़ोसी कहते हैं कि उनका पड़ोस बहुत अच्छा है । यह सुन- सुनकर मेरे मन में आग लग जाती है । चाहता हूँ कि वे आगे से पड़ोस का नाम न लें । पर क्या करूँ, हर आदमी की कुछ विवशता होती है; मेरी भी है । तभी कोई न कोई आकर कटे पर नमक छिड़कता रहता है– 'तुम्हारा पड़ोसी अपने पड़ोस की बहुत तारीफ कर रहा था ।' भई क्यों नहीं करेगा तारीफ ! बुद्धू और दब्बू पड़ोसी सब चाहते हैं ।

परसों की बात है । शर्मा जी का नौकर मेरी खाट वापिस कर गया है । एक साल दो मास चार दिन बाद भी वह इसलिए वापिस आई थी क्योंकि उसमें जान नहीं रही थी । बाध उधड़े पड़े थे और अदवान नदारद थी । शर्मा जी ने उसे पिछले साल अपने घर मेहमान आने के उपलक्ष्य में मँगाई थी । उस समय पत्नी ने कहा था, ''टूटी खाट दे दो ।'' पर मैं लड़ पड़ा था– ''मेहमान क्या कहेंगे । सबसे अच्छी खाट जानी चाहिए ।'' वह खाट अखबार के विज्ञापनों में 'इस्तेमाल से पहले' का चित्र थी और जो परसों लौटकर आई है, वह 'इस्तेमाल के बाद' की प्रतिरूप थी । मैंने दबी जबान से पूछा भी–''भई, इसकी अदवान की रस्सी कहाँ गई ?''

नौकर ने कहा, ''बाबू जी से पूछूँगा ।'' मेरे पड़ोसी भी इतने भले हैं कि उसी समय नौकर से जवाब भिजवा दिया–उनकी कपड़े सुखाने की बिलंग की रस्सी टूट गई थी, सो मेरी रस्सी ने उनकी बड़ी सहायता की है । एक दो दिन में वे बाजार से नई रस्सी ले आएँगे, तब मेरी अदवान वापिस भेज देंगे ।

बगल के हजेला साहब को अखबार पढ़ने का शौक है । वह यह कहते हैं, ''मेरे यहाँ स्टेट्समैन और तुम्हारे घर हिंदुस्तान टाइम्स आता है । मैं जानता हूँ कि ये अखबारवाले बड़ी बेपर की उड़ाते हैं, परंतु दोनों को साथ पढ़कर मैं सच को ढूँढ़ निकालता हूँ ।'' वैसे मैं जानता हूँ कि वे भी बेपर की उड़ा रहे हैं, उनके घर कोई अखबार नहीं आता । समय के पाबंद इतने हैं कि अखबार आने के पूरे दो मिनट बाद उनकी आवाज आती है– ''क्यों भई, अखबार आ गया क्या ?'' अखबार उड़ जाता है और शाम को मेरे दफ्तर से लौटने के बाद ही वह लौटता है । मैं यही सोचकर दिल को मना लेता हूँ कि

परिचय

जन्म : ३ जनवरी १९२८ मेरठ (उ.प्र.)

परिचय : कहानीकार, उपन्यासकार, नाटककार अरुण जी ने साहित्य की विविध विधाओं में भरपूर लेखन किया है । इसके अतिरिक्त १९९९ में आपका समग्र बालसंकलन प्रकाशित हुआ जिसमें बच्चों के लिए लिखी १४ पुस्तकें संकलित हुईं ।

प्रमुख कृतियाँ : कुल १०४ पुस्तकें प्रकाशित । बृहद हास्य संकलन (कहानी संग्रह), मेरे नवरस (एकांकी संग्रह) आदि ।

गद्य संबंधी

हास्य–व्यंग्य निबंध : किसी विषय की तार्किक, बौद्धिक विवेचना करने वाला लेख निबंध होता है । हास्य–व्यंग्य निबंध में उपहास का प्राधान्य होता है ।

प्रस्तुत निबंध में लेखक ने पड़ोसियों के व्यवहार पर करारा व्यंग्य किया है ।

बहुत-सी जगह ऐसी हैं जहाँ अखबार अगले दिन पहुँचते हैं और वहाँ के रहने वालों को एक दिन बासी खबरें पढ़ने को मिलती हैं ।

आपको एक भेद की बात बताता हूँ, कहीं मेरे पड़ोसियों को न बता दीजिए। मेरी जितनी किताबें हैं सब पर मेरे दोस्तों का नाम लिखा है। इसका राज यह है कि किताबें खरीदकर मैं लाता हूँ और पढ़ता सारा मोहल्ला है । कई बार सोचा कि यह शौक छोड़ दूँ किंतु जिसकी तलब पड़ गई वह आदत कहाँ छूट सकती है । पहले किताबें पड़ोस में माँगी जाती थीं, वहीं रमी रह जाती थीं । इस बेवफाई से बचने के लिए मैंने यह तरकीब लड़ाई है कि किताब खरीदते ही उसपर किसी दूसरे का नाम डाल देता हूँ । जिससे पड़ोसी लोग वापिस कर देते हैं और यदि वापिस नहीं भी कर रहे होते हैं तो मैं उनपर जोर डाल सकता हूँ- ''भई, दूसरे की किताब है, वह मेरी जान खा रहा है ।'' जिस दिन से यह युक्ति भिड़ाई है, अस्सी प्रतिशत पुस्तकें मुझे वापिस मिल गई हैं ।

चाय, चीनी माँगकर ले जाना न मालूम के बराबर हो गया है पर मेरी तो बाल्टी और कड़ाही भी मँगी चली जाती हैं । रोजमर्रा की चीज देने का एक नुकसान यह है कि उन्हें लौटाने कोई नहीं आता, मुझे ही उनके घर के पाँच-छह चक्कर काटने पड़ते हैं ।

बाल्टी का उदाहरण लीजिए । बाबू रामकृष्ण माँग कर ले गए थे । पहली बार वापिस लेने गया तो द्वार में घुसते ही पता चला कि वे घर पर नहीं हैं अगली बार वे नहा रहे थे । मैं पंद्रह मिनट बैठा रहा, लेकिन उनकी पत्नी ने कहला भेजा कि नहाते ही वे पूजागृह में चले जाते हैं और एक घंटे बाद निकलते हैं । भाई, अपनी बाल्टी लेनी थी, सो मैं भी ताक में लगा रहा । एक दिन अपने छज्जे से मैंने उन्हें गली में घूसते हुए देख लिया और झटपट नीचे उतरकर उन्हें अपनी बैठक में साइकिल रखते हुए आ पकड़ा । मुझे देखकर वे खिझाई हँसी हँसे और खुद बखुद उन्हें बाल्टी याद हो आई । नौकर को आवाज लगाकर बोले, ''अरुण जी की बाल्टी दे जा ।''

नौकर बाहर निकला, ''बहू जी कह रही हैं वह तेल में सनी पड़ी है, हम शाम को साफ करके स्वयं भेज देंगे ।'' मैं शिष्टाचार में मुस्कराया, ''भाई, जरूरी काम है । मँगा दो, हम खुद साफ कर लेंगे ।''

उन्होंने भी नौकर को धुड़का, ''जा, ऐसी ही ला दे । उनकी बाल्टी है, बेचारे तंग हो रहे होंगे । तुम लोगों को चीज मँगानी तो याद रहती है .....'' अपनी डाँट को अधूरी छोड़कर वे मेरी ओर मुड़े, ''अरुण जी, रोजाना वापिस करने की सोच रहा था, लेकिन काम नहीं निपटा था और सच्ची बात तो यह है कि काम अभी निपटा कहाँ है ।''

गरज यह है कि बाल्टी वापिस आई, जो बिलकुल साफ थी और वापिस लेकर चलते समय उनकी बातों ने मुझे यह अनुभव करा दिया कि केवल दस दिन में बाल्टी वापिस लेते हुए मैं ''उनपर बड़ा अन्याय कर रहा हूँ ।''

छोटी चीजों को मारिए गोली, मोटी चीज लीजिए । पिछले साल दिवाली

ध्वनि प्रदूषण के बारे में अपने शब्दों में लिखिए ।

लेखक वा.रा. गाणार / प्रवीण कारखानीस का कोई एक यात्रा वर्णन पढ़िए ।

से पहले मेरे घर पर पुताई चल रही थी । एक दिन सवेरे दस बजे बिलकुल मिले घर के पड़ोसी भटनागर साहब की आवाज आई । ''अरुण जी, आपके यहाँ सीढ़ी है ?'' मैंने बगल में झाँका, वे बड़ी शांति से मेरे राज को सीढ़ी पर चढ़े पुताई करते देख रहे थे । बोला, ''जी हाँ ।''

''जरा भेज दीजिए । मेरा पानी का बंब कचरे से भर गया है । उसे ठीक करने मिस्त्री आया है । थोड़ी देर में वापिस कर दूँगा ।'' मैंने जवाब दिया, ''मैंने भी आज के लिए मँगाई है । शाम को राज के जाने के बाद आप ले लीजिएगा । कल सुबह मुझे वापिस भेजनी है । ऊपर की पुताई नहीं निपटी तो दिक्कत हो जाएगी ।''

वे हँस पड़े, ''आप भी कमाल करते हैं । आजकल मिस्त्री को पकड़ लाना हँसी ठट्ठा नहीं है । दस दिन से चक्कर लगा रहा हूँ, तब आज पकड़ाई में आया है । कुल पंद्रह बीस मिनट लगेंगे ।''

मैंने हार मान ली, ''अच्छा मँगवा लीजिए ।''

''मँगवाऊँ किससे ! जरा मेहरबानी करके अपने राज के हाथ भेज दीजिए ।'' तब का गया हुआ राज पूरे तीन घंटे बाद लौट कर आया । पूछने पर पता चला कि उससे सीढ़ी पकड़ने को कहा गया था, कहीं सीढ़ी रपट न जाए। दूसरी बार मैं इससे भी अधिक अच्छा पड़ोसी सिद्ध हुआ । राज पुताई कर रहा था इस बार शर्मा जी पधारें । ''आपके घर राज काम कर रहा है ?''

''जी हाँ,'' मैंने कहा ''आज उसे मेरे घर भेज दीजिए । एक दो छेद बंद करवाने हैं, चूहों ने तंग कर दिया है और भी मरम्मत करानी है ।''

मैंने अच्छे पड़ोसी के नाते राज को आते ही उनके घर भेज दिया । पाँच मिनट बाद शर्मा जी पधारें, ''भाई साहब, आपके यहाँ सीमेंट होगा ?''

सीमेंट का नाम सुनकर औसान ढीले हो गए । दस दिन खड़े होकर दो बोरी मिला था । ''बात यह है ...

''आप चिंता न करें । मेरे साढ़ू का भतीजा सप्लाई में है । बस, एक तसला दे दीजिए मेरा आज का काम चल जाएगा । एक दो दिन में मैं आपको बोरी ला दूँगा ।''

मन मारकर हाँ करनी पड़ी । एक तसला करके मेरी एक बोरी खाली हो गई । मुझे वही चुटकुला याद आ गया । आप के पास माचिस होगी ?'' और माचिस लेने के बाद, ''फिर तो सिगरेट भी होनी चाहिए ?''

एक बोरी सीमेंट और आज की दो दिन की मजदूरी खोकर मुझे अच्छा पड़ोसी बनने में कोई रोक सकता है ? बस पड़ोसियों को कुछ डर है तो मेरी पत्नी से किंतु वह भी बचपन से पड़ी बुरी-भली आदतों को कहाँ तक कन्ट्रोल कर सकती है ।

सारा पड़ोस कहता है कि मैं अच्छा पड़ोसी हूँ और मैं तथा पत्नी जल-भुनकर रह जाते हैं ।

—०—

मौलिक सृजन

'कैशलेस इंडिया सच या सपना' इसपर अपने विचार स्पष्ट कीजिए ।

संभाषणीय

पुण्यश्लोक अहिल्याबाई होळकर जी की जीवनी का अंश पढ़िए और उनका सामाजिक कार्य बताइए ।

श्रवणीय

बचपन की संस्मरणीय घटना सुनाइए ।

शब्द संसार

बाध (पुं.सं.) = खाट बुनने की रस्सी (सुतली)
विवशता (भा.सं.) = लाचारी
अदवान (स्त्री.सं.) = उनचन
नदारद (वि.फा.) = गायब
बिलंग (स्त्री.अ.) = कपड़े सुखाने की रस्सी
तलब (स्त्री.अ.) = इच्छा, चाह, आवश्यकता
तरकीब (स्त्री.अ.) = युक्ति, उपाय
रोजमर्रा (क्रि.वि.) = नित्य
तसला (पु.सं.) = एक प्रकार बड़ा और गहरा बर्तन

मुहावरे

कटे पर नमक छिड़कना = दुखी को अधिक दुख देना / बुरी लगने वाली बात कहना
औसान ढीले होना = घबरा जाना
जल-भुनकर रह जाना = बहुत गुस्सा आना

पाठ के आँगन में

(१) सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

75Y11B

(क) प्रवाह तालिका पूर्ण कीजिए

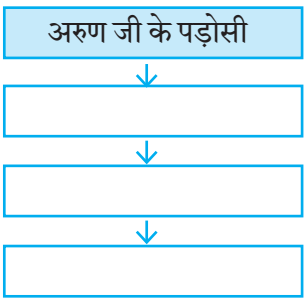

(२) उचित विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए :

(च) पानी का बंब ठीक करने ..... (लुहार/सुनार/मिस्त्री) आया।

(छ) दिवाली से पहले मेरे घर .....(छिपाई/पुताई/लिपाई) चल रही थी।

(३) पाठ में प्रयुक्त अखबारों के नाम लिखिए।

(ख) अरुण जी के घर से माँगी जाने वाली चीजें

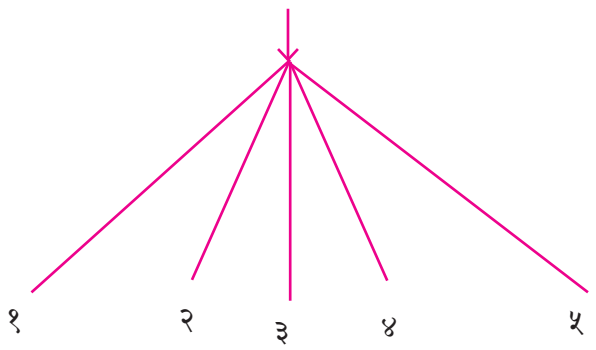

पाठ से आगे

'शालेय अनुशासन और विद्यार्थी' विषय पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

रचना बोध

.....
.....
.....

भाषा बिंदु

(१) निम्न पत्र में आए कालों के वाक्यों को ढूँढ़कर लिखिए तथा निर्देशानुसार परिवर्तित करके पुनः लिखिए :–

धन्यवाद पत्र

..... घर क्र.
..... ग्राम/शहर
..... जिला
दिनांक .....

सम्माननीय ..... जी

सादर नमस्कार ।

मैं आपको नहीं जानता । आप मुझे नहीं जानते । मेरे और आपके बीच एक ही नाता है – एक भले इनसान का । मैं आपके द्‌वारा भिजवाई गई अटैची को पाकर हृदय से कृतज्ञ हूँ । मेरा रोम-रोम आपको शुभकामना दे रहा है ।

मैं रेलगाड़ी में भूली हुई अटैची के कारण बहुत परेशान था । मेरे सारे सर्टीफिकेट, पैसे, महत्त्वपूर्ण कागजात उस अटैची में थे । पिछले तीन दिनों की अथक कोशिश के बाद मेरा मन निराश हो चुका था । मुझे लगने लगा था कि जैसे इस दुनिया में ईमानदारी बची ही नहीं है परंतु आपने मेरी अटैची अपने बेटे के हाथों भेजकर मेरी सारी निराशा को आशा में बदल दिया । तब से मैं बहुत प्रसन्न हूँ ।

मान्यवर ! आपकी ईमानदारी ने सचमुच मुझे नया विश्वास दिया है । आप विश्वास रखिए, भविष्य में मैं किसी की भी परेशानी दूर करने का प्रयास करूँगा ।

मैंने अटैची देख ली है । एक-एक वस्तु यथास्थान सुरक्षित है । आपका हृदय से धन्यवाद ।

भवदीय
.....

(२) निर्देशानुसार पत्र से काल ढूँढ़िए एवं परिवर्तित करके लिखिए :–

क्र.	काल	वाक्य	काल	परिवर्तित वाक्य
१.	सामान्य भूतकाल		सामान्य वर्तमान काल	
२.	सामान्य वर्तमान काल		सामान्य भविष्यकाल	
३.	सामान्य भविष्यकाल		पूर्ण भूतकाल	
४.	अपूर्ण वर्तमान काल		अपूर्ण भूतकाल	
५.	पूर्ण भूतकाल		सामान्य वर्तमानकाल	